आत्मकथा की विभिन्न परिभाषाएँ–

आत्मकथा की भारतीय एवं पाश्चात्य विविध परिभाषाएँ दी गई हैं, जिनमें कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ विचारणीय हैं । सर्वप्रथम भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ देखें –

भारतीय परिभाषा –

1. 'आत्मकथा' आत्मबयानी के माध्यम से अपने जीवन की भोगी हुई वह सच्ची दास्तां है, जो आत्मनिरीक्षण, आत्मन्याय एवं आत्मज्ञान के उद्देश्य से लिखी जाती है। आत्मकथा का शाब्दिक अर्थ ही है - अपनी कहानी या अपने जीवन की कहानी। वस्तुतः सचबयानी के माध्यम से लेखक द्वारा स्वयं की प्रस्तुत कथा आत्मकथा है। संस्कृत - साहित्य में भी कहा गया है - "आत्मनः विषये कथ्यते आत्मकथा" - अर्थात् जहाँ अपने ही विषय में बात कही जाये, वही आत्मकथा है। 'आत्मकथा' अंग्रेजी के 'ऑटोबायग्राफी' (Autobiography) का हिन्दीकरण है। आत्मकथा की 'आत्मचरित' और 'आत्मचरित्र' ये दो संज्ञाएँ भी प्रचलित हैं और ये स्वतः आत्मकथा से भिन्न भी नहीं हैं। इनमें एक सूक्ष्म अंतर कदाचित् यह है कि आत्मचरित कहलाने वाली रचना किंचित् विश्लेषणात्मक और विवेक प्रधान होती थी और अब आत्मकथा कही जाने वाली कृति अपेक्षया अधिक रोचक और सुपाठ्य होती है।

2. आत्मकथा शब्द में 'आत्म' शब्द का अर्थ है – अपना निज का, आत्मा का, मन का और कथा का अर्थ है - जीवन की कहानी। अतः आत्मकथा का अर्थ हआ - स्वलिखित जीवन चरित।

3. हिंदी साहित्य कोश में कहा गया है कि - "आत्मकथा लेखक के अपने जीवन से सम्बद्ध वर्णन है। आत्मकथा के द्वारा अपने बीते हए जीवन का सिंहावलोकन और एक एक व्यापक पृष्ठभूमि में अपने जीवन का महत्त्व दिखलाया जाना संभव है।"

4. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का मत है कि – "आत्मकथा वस्तुतः रहस्य के प्रकाशन के लिए लिखी जाती है। व्यक्ति का जो स्वरूप सामान्यतया समाज के सामने नहीं आता, उसे लाना ही आत्मकथा का प्रयोजन है।"

5. डॉ. नित्यानंद तिवारी की मान्यता है कि – "आत्मकथा स्वयं लेखक के द्वारा उसके अपने जीवन का सम्बद्ध वर्णन है । प्राय: 2 उद्देश्यों को लेकर आत्मकथा लिखी जाती है – 1. आत्म-निर्माण या आत्म-परीक्षण और 2. दुनिया और समाज के जटिल परिवेश में अपने आपको जानने – समझने की इच्छा।

6. डॉ. त्रिगुणायत के शब्दों में – 'आत्मकथा' लेखक के जीवन की दुर्बलताओं सफलताओं इत्यादि का संतुलन और व्यवस्थित चित्रण है, जो उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व के निष्पक्ष उदघाटन करने में समर्थ होता है।"

7. ओमप्रकाश सिंघल ने आत्मकथा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि – "जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनी स्वयं लिखता है, तब उसे आत्मकथा कहते हैं। साहित्य की इस विधा में लेखक वर्णात्मक शैली में अपने जीवन का एक ऐसा क्रमिक ब्यौरा प्रस्तुत करता है कि न केवल उसके जीवन को संजीवनी प्रदान करने वाली मूल शक्ति का पता चल जाता है, अपितु उसका अंतर्बाह्य व्यक्तित्व भी साकार हो उठता है। आत्मकथा लेखक के अतीत का लेखा-जोखा भर नहीं है, तो यह तो परिवेश विशेष में जीए गये क्षणों का पुनः सृजन है।"

पाश्चात्य परिभाषाएँ –

8. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार – "आत्मकथा सामान्य रूप से किसी व्यक्ति द्वारा लिखित स्वयं का जीवन चरित है । उसके अनेक उद्देश्यों में आत्म – निरीक्षण, आत्मज्ञान और आत्मन्याय है।"

9. इन साइक्लोपीडिया अमेरिका में कहा गया है कि - व्यापक अर्थ में आत्मकथा लेखक के व्यक्तिगत जीवन की कहानी है, जो स्मृति, डायरी, पत्र इत्यादि के रूप में अभिव्यक्त होती है।

10. वेनशीमेकर के शब्दों में - "आत्मकथा व्यक्ति-विशेष के द्वारा लिखी गई एवं प्रतिपादित एक सच्चा अभिलेख है, जिसमें लेखक के जीवन की सम्पूर्ण घटनाएँ यथासंभव स्वयं लेखक द्वारा लिखी जाती है।

11. शिप्ले की दृष्टि में – "आत्मकथा लेखक के जीवन का एक श्रृंखलाबद्ध ऐसा विवरण है, जिसमें वह अपने विशाल जीवन - सामग्री की पृष्ठभूमि में से कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को लेकर उनको व्यवस्थित ढंग से सामने रखता है या फिर अपनी अंतर्दृष्टि से उसको संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करता है।"

आत्मकथा की उपर्युक्त भारतीय एवं पाश्चात्य परिभाषाओं के अवलोकन के उपरांत मेरी दृष्टि में यह कहा जा सकता है कि - आत्मकथा लेखक के जीवन की ऐसी दास्तां है, जिसमें आत्मकथाकार की जिंदगी की तस्वीर गुण-दोषों सहित व्यापक फलक पर साकार होती है। आत्मकथा लेखक की जी हुई ज़िंदगी की वह एक खुली किताब है, जिसमें सचबयानी के माध्यम से आत्मकथाकार का 'भोगा हुआ जीवन - सत्य' आत्मनिरीक्षण, आत्मज्ञान और आत्मन्याय के धरातल पर अभिव्यक्त होता है। साथ-ही-साथ वह पथ-प्रदर्शक साहित्य की भूमिका का भी महत्वपूर्ण एवं उत्तम निर्वाह करता है।

आत्मकथा – स्वरूप एवं विशेषताएँ –

आत्मकथा की उपयुक्त परिभाषाओं के आधार पर आत्मकथा की निम्नांकित विशेषताएँ प्रकट होती हैं –

1. आत्मकथा आत्मकथाकार के स्वयं का जीवन - चरित है।

2. आत्मकथा आत्मकथाकार के जीवन का वह दस्तावेज़ है, जिसमें उसके भोगे हुए जीवन के क्षण की अभिव्यक्ति, घटनाएँ इत्यादि क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में साकार होती हैं। घटनाओं की क्रमबद्धता एवं उसका व्यवस्थित रूप आत्मकथा की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

3. आत्मकथा का नायक स्वयं लेखक होता है । इसकी विषय - वस्तु उसके जीवन में घटित तमाम घटनाएँ होती हैं। आत्मकथा की शैली 'मैं' शैली होती है।

4. आत्मकथा में आत्मकथाकार अपने जीवन की घटनाओं को सत्य रूप में बयां करता है। इतना ही नहीं, वह अपने गुणों के साथ - साथ दोषों को भी प्रकट करता है। सत्यता, यथातथ्यता, ईमानदारी और तटस्थता आत्मकथा की अन्य प्रमुख विशेषताएँ है।

5. आत्मकथा लेखक के भोगे हुए जीवन का वह एलबम होता है, जिसमें उसकी अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ, भावनाएँ, एवं विविध क्रियाकलापों की अभिव्यक्ति आत्मबयानी के माध्यम से साकार होते हैं।

6. आत्मकथा न सिर्फ लेखक के जीवन के विभिन्न पृष्ठों का सच्चा अध्याय होता है बल्कि इसमें उसका परिवेश भी मुखर होता है।

7. आत्माभिव्यक्ति, आत्म - साक्षात्कार, आत्म - निरीक्षण, आत्म - मूल्यांकन आत्म - न्याय, आत्म - ज्ञान इत्यादि आत्मकथा के उद्देश्य होते हैं । साथ ही आत्मकथा समाज और राष्ट्र के लिए एक पथ - प्रदर्शक, दिशा निर्धारक, आदर्श और प्रेरक साहित्य होता है।

8. आत्मकथा एक कालजयी रचना होती है । इसकी प्रासंगिकता, महत्ता और उपादेयता युग - युगों तक चिरंतन सत्य और शाश्वत बनी रहने की पूरी संभावना होती है।

आत्मकथा के तत्त्व –

आत्मकथा के प्रमुख एवं गौण तत्त्वों को निम्न रूप में देखा जा सकता है –

1. वर्ण्य-विषय – आत्मकथा का वर्ण्य-विषय आत्मकथाकार के उसके स्वयं के जीवन का वृतांत होता है। आत्मकथा की कथावस्तु का संबंध समाज, राजनीति, साहित्य इत्यादि से जुड़ा कोई प्रतिष्ठित एवं महान् व्यक्ति होता है। आत्मकथा में आत्मकथाकार अपने जीवन में घटित तमाम घटनाओं को सिलसिलेवार, क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित ढंग के सत्य, यथार्थ, अनुभूति, संवेदना, ईमानदारी और यथातथ्यता इत्यादि के धरातल पर प्रस्तुत करता है। वस्तुतः आत्मकथा का प्रमुख घटक-वर्ण्य-विषय का श्रृंखलाबद्ध, सुव्यवस्थित रूप से यथातथ्य जीवन की प्रस्तुति एवं तटस्थता होती है। शिप्ले ने आत्मकथा को लेखक के जीवन का श्रृंखलाबद्ध विवरण कहा भी है। यदि आत्मकथा में घटनाओं का श्रृंखलाबद्ध एवं सुव्यवस्थित नियोजन नहीं होगा तो पाठक को रसाघात होगा और उसे आनंदानुभूति प्राप्त नहीं होगी।

2. व्यक्तित्व-चित्रण – व्यक्तित्व-चित्रण आत्मकथा का दूसरा प्रधान एवं मूलभूत तत्त्व है। 'आत्मकथा' स्व-विषय पर स्व-लेखन है, जिसने लेखक स्वयं ही अपने व्यक्तित्व का चरित्र-चित्रण करता है। आत्मकथा में अन्य पात्रों की योजना नहीं होती, अन्य पात्र न्यूनाधिक रूप में आते भी हैं तो वे लेखक के चरित्र के निमित्त मात्र ही होते है। इसलिए आत्मकथा में आत्मकथाकार को निष्पक्ष, निर्दोष एवं ईमानदारी के साथ आत्म-विवेचन करने की जरूरत होती है। इस प्रकार आत्मकथा लिखना आसान नहीं होता। इसमें पग-पग पर लेखक की परीक्षा हो जाती है। आत्मकथाकार अब्राहम काउली की भी मान्यता है कि – किसी आदमी को अपने बारे में खुद लिखना मुश्किल भी है और दिलचस्प भी क्योंकि अपनी बुराई या निंदा लिखना खुद हमें बुरा मालूम होता है और अगर हम तारीफ करें तो पाठक को उसे सुनना नागवार मालूम होता है।

वही आत्मकथा सच्ची आत्मकथा कही जाती है, जिसमें लेखक अन्यान्तर पक्ष सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ निःसंकोच उद्‌घटित हो। इस दृष्टि से हिंदी में इधर कस्तूरी कुंडल बसै (मैत्रेयी पुष्पा, 2002), कहानी यह भी है (मन्नू भंडारी, 2007), अन्या से अनन्या (प्रभा खेतान, 2007), गुड़िया भीतर गुड़िया (मैत्रेयी पुष्पा, 2008), आपहुदरी (रिमणिका गुप्ता, 2014) आरोह-अवरोह (सुषम वेदी 2014) इत्यादि स्त्री आत्मकथा-साहित्य जो सृजित हुए हैं, स्त्री के आंतरिक व्यक्तित्व-चित्रण की दृष्टि से बेमिसाल रचनाएँ हैं। बोल्ड रूप में प्रभा खेतान 'अन्या से अनन्या' आत्मकथात्मक कृति में अपने निजी व्यक्तित्व का उद्‌घोष करती हुई लिखती हैं कि - "मैं सधवा नहीं, क्योंकि मेरी शादी नहीं हुई, मैं विधवा नहीं क्योंकि मेरा कोई दिवंगत पति नहीं। मैं कोठे पर बैठी रंडी भी नहीं...क्योंकि मैं अपने देह का व्यापार नहीं करती। स्वावलम्बी हूँ, अपना भरण-पोषण खुद करती हूँ...मगर अविवाहित रहकर एक विवाहित पुरुष, पाँच बच्चों के

पिता के साथ टँगे रहना, भला यह भी कोई बात हुई? वस्तुतः व्यक्तित्व का यथार्थ, तटस्थता, ईमानदारी और साफगोई रूप में चरित्र-चित्रण करना आत्मकथा की साँसें हैं। इनके अभाव में 'आत्मकथा' आत्मकथा नहीं बल्कि एक शव है; सांसरहित, बेजान और निष्प्राण-शव ।

3. ऐतिहासिक तथ्य (देशकाल)– आत्मकथा लेखकीय जीवन की अंतर्यात्रा की एक जीवंत कहानी, एक सच्चा दस्तावेज या एक जीती-जागती गाथा होती है, जिसमें 'देशकाल' तत्त्व की महत्ता ज्यादा नहीं होती किंतु ऐसा भी नहीं होता कि यह बिल्कुल महत्त्वहीन होता है।आत्मकथाकार का व्यक्तित्व पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक इत्यादि विभिन्न बाह्य परिस्थितियों में पल्लवित-पोषित होता है। अतः ये तमाम परिस्थितियाँ उसके व्यक्तित्व-निर्माण में सहायक होती हैं और इन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में ही आत्मकथाकार के व्यक्तित्व की जटिलताओं, अंतर्द्वन्द्वों, संघर्षों, अनुभूतियों एवं संवेदनाओं इत्यादि को भली - भाँति जाना और समझा जा सकता है । आत्मकथा में लेखक के आंतरिक वातावरण (भावों, विचारों इत्यादि) की सशक्त अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार, व वातावरण को एक गौण तत्त्व माना जा सकता है।

4. भाषा-शैली – भाषा-शैली आत्मकथा का वह प्रमुख तत्त्व है, जो लेखक के जीवनचरित की तमाम घटनाओं में प्राण फूँकता है। प्रो. जयनाथ नलिन ने शैली के विषय में क्या खुब टिप्पणी की है कि – “बात सभी कहते हैं, तब क्यों एक की कलेजे में बैठती है और एक की कानों में भी नहीं? एक की बात से गुदगुदी के धुंघरू बज उठते है, एक की बात से बातों का आलस्य भी नहीं उतरता। बात के कहने का ढंग है, यही शैली। आत्मकथा की शैली 'मैं' शैली होती है। आत्मकथा में आत्मकथाकार प्रसंगानुसार, वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, तुलनात्मक, संवादात्मक, हास्य-व्यंग्यात्मक, स्वगत-शैली इत्यादि विभिन्न शैलियाँ प्रस्तुत करता है। आत्मकथाकार की शैली में सजीवता, प्रभावोत्पादकता, स्पष्टता, लाघवता, सुसंगठितता, संक्षिप्तता इत्यादि गुणों का संस्पर्श होता है।

5. उद्देश्य – आत्मकथा क्यों लिखा जाता है? यह प्रश्न बड़ा महत्त्वपूर्ण है। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार - "आत्मकथा साहित्य का उद्देश्य होता है – आत्मनिर्माण, आत्म-परीक्षण, अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का मोह या जटिल विश्व के उलझावों में अपने आप को समन्वित करने का सात्त्विक प्रयास।...आत्म-संबंधी साहित्य लिखने का दूसरा उद्देश्य यह भी है कि लेखक के अनुभवों का लाभ अन्य उठा सकें।

आत्मकथा और जीवनी में अंतर

आत्मकथा और जीवनी में निम्नांकित अंतर हैं –

1. आत्मकथा और जीवनी में सबसे बड़ा और सर्वप्रमुख अंतर यह है कि आत्मकथा स्वयं द्वारा रचित रचना होती है जबकि जीवनी अन्य के द्वारा सृजित रचना होती है। आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन के विविध महत्त्वपूर्ण पक्षों पर प्रकाश डालता है जबकि जीवनी में लेखक अपने चरितनायक के जीवन पर प्रकाश डालता है। दूसरे शब्दों में, आत्मकथा अर्थात् अपनी कथा, अपने द्वारा लिखित कथा है जबकि जीवनी अर्थात् पर कथा एवं दूसरे के द्वारा लिखित कथा है । इस प्रकार लेखकीय दृष्टि से भी आत्मकथा और जीवनी में महत्त्वपूर्ण अंतर है।

2 . आत्मकथा और जीवनी में दूसरा मुख्य अंतर वर्ण्य-विषय और वर्ण्य-विषय की जानकारी के स्रोत को लेकर है। 'आत्मकथा' का वर्ण्य-विषय लेखक के स्वयं का जीवन होता है जबकि 'जीवनी' का वर्ण्य - विषय समाज का कोई आदर्श, प्रतिष्ठित अथवा लेखक की दृष्टि में कोई श्रद्धेय या प्रेरणास्रोत पात्र होता है। आत्मकथा-लेखक को जितना अपने

विषय में जानकारी होती है, उतना जीवनी-लेखक को अपने चरितनायक के विषय में नहीं। इस प्रकार, आत्मकथा-लेखक के समक्ष जानकारी का स्रोत विशाल, दीर्घ एवं विस्तृत होता है (और उसे इसके लिए भटकना नहीं पड़ता) जीवनी-लेखक के समक्ष जानकारी का स्रोत लघु, सीमित एवं संक्षिप्त होता है।

3. आत्मकथा प्रायः लेखक के (जीवित) जीवन-काल की रचना होती है जबकि जीवनी चरितनायक के जीवनकाल की रचना हो सकती है और नहीं भी।

4. आत्मकथा और जीवनी में एक अन्य अंतर तटस्थता को लेकर भी है। आत्मकथाकार की तुलना में जीवनीकार अधिक तटस्थ होता है क्योंकि जीवनी आत्मकथा की भाँति आत्मपरक लेखन न होकर अन्यपरक लेखन होता है।

5. यथातथ्यता की दृष्टि से भी आत्मकथा और जीवनी में असमान्य अंतर है । आत्मकथा चूँकि स्वपरक रचना है इसलिए इसमें यथातथ्यता जीवनी की तुलना में ज्यादा होती है। अन्यपरक रचना होने के कारण जीवनीकार को 'जीवन' में कल्पना के रंग की छटा भी बिखेरने पड़ती है।

6. आत्मकथा का संबंध स्व-जगत् से होता है इसलिए आत्मकथा में आत्मकथाकार को अपने जीवन की घटनाओं एवं अन्य पक्षों को तोड़ने-मरोड़ने की पूरी आजादी होती है। चूँकि जीवनी किसी व्यक्ति-विशेष का जीवन-वृत्तांत होता है, जिसके कई पहलुओं से लोग वाकिफ होते हैं, इसलिए जीवनीकार चरितनायक के जीवन की घटनाओं और अन्य पक्षों को तोड़-मरोड़ नहीं सकता है।

7. आत्मकथा और जीवनी में एक मुख्य अंतर यह भी दिखाई पड़ता है कि आत्मकथा में आत्मकथाकार के समक्ष आत्मश्लाघा अर्थात् अपने गुणों के बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने की ज्यादा संभावना नहीं होती जबकि जीवनी-साहित्य में जीवनीकार द्वारा अपने चरितनायक के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर अतिशयोक्ति रूप में प्रस्तुत करने की पूरी आशंका एवं संभावना होती है। बाबू गुलाबराय का भी मत है कि – 'जीवनीकार अपने चरित नायक के गुण-दोषों का समन्वित रूप से वर्णन करता है परंतु वह दोषों अधिक गणों के महत्त्व को ही प्रतिपादित करता है। वह दोष को गुणों के आलोक में छिपा देता है, जैसे कलंक तो सूर्य में भी होता है परंतु यह कलंक किसी को दिख नहीं पाता क्योंकि उसका प्रकाश ही इतना तेज होता है।

8. आत्मकथा जीवनी से अधिक प्रामाणिक एवं सत्याभिमुख रचना होती है क्योंकि आत्मकथा में आत्मकथाकार के स्वयं का व्यक्तित्व स्वयं के द्वारा मुखरित होता है जबकि जीवनी में लेखक अपनी जानकारी के साथ-साथ अन्य स्रोतों से अपने चरितनायक के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है।

डॉ. राम अवध द्विवेदी इसी अंतर पर प्रकाश डालते हुए लिखते है कि – "जीवनी में घटनाएँ साक्षी द्वारा देखी और कही जाती हैं। प्रमुख साक्षी लेखक स्वयं होता है और वह विभिन्न स्रोतों से साक्ष्य एकत्र करता है। आत्मकथा में जो कर्त्ता होता है वही द्रष्टा और साक्षी भी होता है। एक ओर तो लेखक बहुत सी बातें कहता है तो दूसरी ओर उनका निरीक्षक बनकर तटस्थ भाव से उनकी आलोचना और अभिव्यक्ति करने का प्रयास करता है। इस प्रकार आत्मकथा जीवनी से कहीं अधिक प्रामाणिक एवं अधिकाधिक सत्य पर आधारित रचना होती है।

9. शैली की दृष्टि से आत्मकथा और जीवनी में एक मूलभूत अंतर है। 'आत्मकथा' उत्तम पुरुष-शैली में रचित रचना होती है जबकि 'जीवनी' अन्य पुरुष की शैली में रचा जाता है। इस प्रकार, आत्मकथा और जीवनी में लेखक, वर्ण्य-विषय, वर्ण्य-विषय के स्रोत, काल, तटस्थता, यथातथ्यता, प्रामाणिकता, घटनाओं की प्रस्तुति, शैली इत्यादि विभिन्न दृष्टियों से भिन्नताएँ ही भिन्नताएँ हैं।